इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

एवं

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

के संयुक्त तत्त्वावधान में "**शास्त्र अध्ययन, सम्पादन एवं सम्पादन प्रविधि**" पर आधारित **उच्चस्तरीय पाण्डुलिपिविज्ञान कार्यशाला** का संक्षिप्त विवरण।

(दिनांक ०३ जून २०१९ से दिनांक ०२ जुलाई २०१९ तक)

उद्घाटन सत्र– प्रोफेसर उमारानी त्रिपाठी, प्रोफेसर ब्रजकिशोर स्वाइँ एवं प्रोफेसर राजाराम शुक्ल

शास्त्र अध्ययन, सम्पादन एवं सम्पादन प्रविधि पर आधारित उच्चस्तरीय पाण्डुलिपिविज्ञान कार्यशाला का अद्घाटन श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के धर्मशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रजकिशोर स्वाईं जी की अध्यक्षता में हुआ। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर राजाराम शुक्ल जी मुख्य अतिथि के रूप में तथा महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के मानविकी संकाय के प्रमुख तथा संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर उमारानी त्रिपाठी सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

डॉ० विजय शंकर शुक्ल अतिथियों का स्वागत एवं कार्यशाला की अवधारणा स्पष्ट करते हुए

इस कार्यशाला में नालन्दा विश्वविद्यालय, बिहार, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के श्रृंगेरी एवं जयपुर परिसर, पटना विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पण्डिचेरी विश्वविद्यालय, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, महापुरुष हाडिदास महाविद्यालय, जाजपुर, ओडिशा, श्री लालबहादुर शास्त्री पी०जी० कॉलेज, मुगलसराय, वीर कुवंर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, गोवरडाङ्ग हिन्दू महाविद्यालय, कोलकाता, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से कुल २५ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यशाला के प्रतिभागी गण

कार्यशाला के प्रमुख तीन बिन्दु थे –

१. **शास्त्राध्यन**

२. सम्पादन एवं ३. **सम्पादन प्रविधि**।

प्रतिभागियों को शास्त्राध्यायन कराने का दायित्त्व न्यायशास्त्र के उद्भट विद्वान् आचार्य वशिष्ठ त्रिपाठी जी तथा व्याकरणशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् आचार्य जयशंकर लाल त्रिपाठी जी पर न्यस्थ था। हमारे प्रतिभागियों के प्रति आप दोनों के असीम कृपा रही जिसके फलस्वरूप न्यायशास्त्रीय ग्रन्थ **व्याप्तिपञ्चकलक्षणरहस्य** तथा व्याकरणमहाभाष्य के **पस्पशाह्निक** का सम्पूर्ण अध्ययन प्रतिभागियों ने किया।

प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी न्याय ग्रन्थ "व्याप्तिपञ्चकरहस्य" का अध्यापन करते हुए

प्रोफेसर जयशंकर लाल त्रिपाठी जी "पस्पशाह्निक" के अध्यापन करते हुए

सम्पादन प्रविधि पर भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों से आमन्त्रित विद्वानों द्वारा ३० व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। प्रथम व्याख्यान इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के निदेशक डॉ० विजय शंकर शुक्ल जी का हुआ। आपने **पाण्डुलिपिविज्ञान तथा हस्तलेख विज्ञान का उद्भव एवं विकास** तथा **पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण** विषयक **दो** व्याख्यान प्रस्तुत किया। आपने भारतीय ज्ञानपरम्परा का क्रमबद्ध विकासक्रम को रेखांकित करते हुए ऋषिपरम्परा से किस प्रकार ज्ञान सम्प्रेषित एवं पल्लवित हुआ, शस्त्र और शास्त्र का अद्भुत समन्वय तथा पाण्डुलिपियों के क्षेत्र, संग्रहालय आदि के विषय में विस्तार से उपयोगी तथ्य प्रतिभागियों के समक्ष रखा।

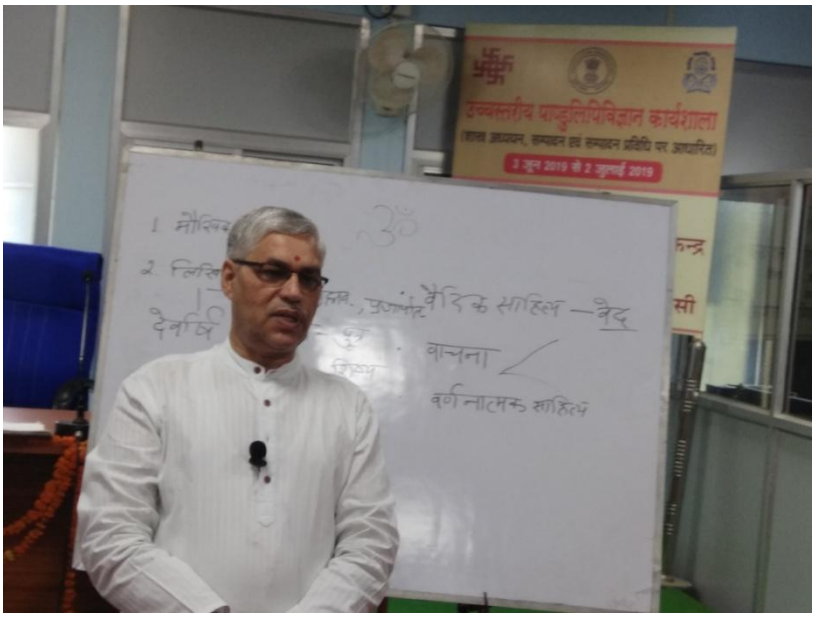

का०हि०वि०वि० के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के प्रोफेसर सीताराम दुबे जी ने **ब्राह्मी लिपि के उद्भव एवं विकास विषयक** तीन व्याख्यान प्रस्तुत किया। आपने लेखन में लोगों की रुचि कैसे बढ़ी और लेखन विधा को आगे बढाने में गुरुकुल की स्थापना तथा शकों, पल्लवों एवं यूनानियों के आक्रमण से लेखन का विस्तार, लेखनियों के भिन्न-भिन्न प्रकार प्रकार, यूनानी मुद्राओं में लेखन का प्रमाण, ब्राह्मीलिपि के विकास क्रम, अक्षरों के स्वरूप आदि अनेक बिन्दुओं पर प्रकाश डाला।

श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी के पूर्व कुलपति तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पुराणेतिहास विभाग के वर्तमान अध्यक्ष प्रोफेसर गङ्गाधर पण्डा जी **सम्पादन कार्य में प्रयुक्त होने वाले तकनीकी शब्दावलियों** पर चर्चा की।

श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल, गुजरात के कुलपति प्रोफेसर गोपबन्धु मिश्र जी ने **एकल पाण्डुलिपियों के सम्पादन में आनेवाली कठिनाइयां** पर चर्चा करते हुए कहा कि लेखकीय धर्म का संरक्षण करना सम्पादक का दायित्व है। अतः सम्पादन के समय अत्यधिक सतर्कता रखनी चाहिए।

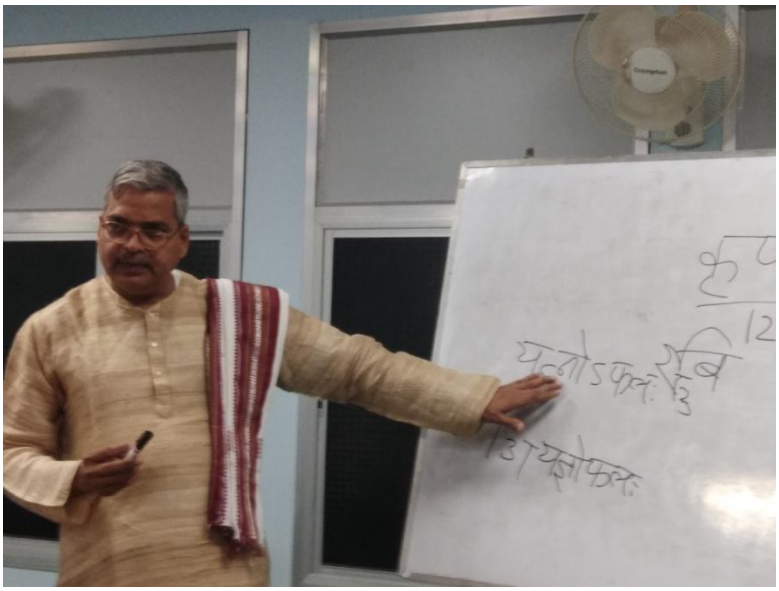

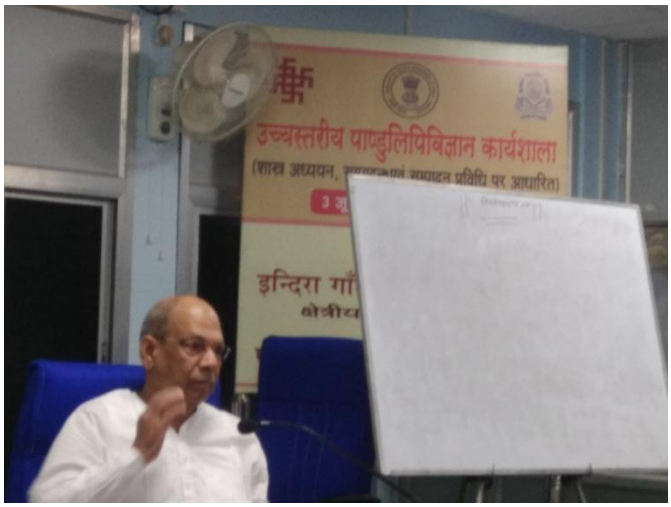

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर के प्राचार्य प्रोफेसर प्रकाश पाण्डेय जी ने **शारदा लिपि में उपलब्ध विशिष्ट पाण्डुलिपियाँ विशेषरूप से धर्मशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में** विषय पर दो उपयोगी व्याख्यान प्रस्तुत किया। विद्वान् वक्ता ने धर्मशास्त्रीय पाण्डुलिपियों के संग्रह हेतु की गयी कश्मीर यात्रा से प्राप्त अनुभव को प्रतिभागियों के बीच

साझा किया।

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष संस्कृत साहित्य के सुनामधन्य विद्वान् प्रोफेसर प्रभुनाथ द्विवेदी जी द्वारा धर्मशास्त्र एवं स्मृतियों पर केन्द्रित विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। आचार्य द्विवेदी जी ने भिन्न-भिन्न धर्मग्रन्थों में उल्लिखित धर्म की परिभाषाओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि स्मृतियाँ मनुष्य मात्र के लिए धर्म, आचार,व्यवहार, नीति आदि विषयों का प्रतिपादन करती है। विद्वान् वक्ता ने १८ मूल स्मृतियों के कर्ताओं के नाम से प्रतिभागियों को परिचित कराया।

पुणे से आमन्त्रित न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर वशिष्ठ नारायण झा जी ने न्याय शास्त्र के ग्रन्थ के सम्पादन सिद्धान्त पर बोधगम्य शैली से व्याख्यान प्रस्तुत किया। आचार्य कौटिल्य के मत का उल्लेख करते हुए उन्होंने न्यायशास्त्र को सभी शास्त्रां का प्रदीप कहा **प्रदीपः सर्वशास्त्राणाम्**। उन्होंने कहा कि न्यायशास्त्र का उद्देश्य है विश्लेषण करने की सामर्थ्य उत्पन्न करना। अतः नव्य न्याय की तरह प्राचीन न्याय का अध्ययन अत्यन्त ही आवश्यक है।

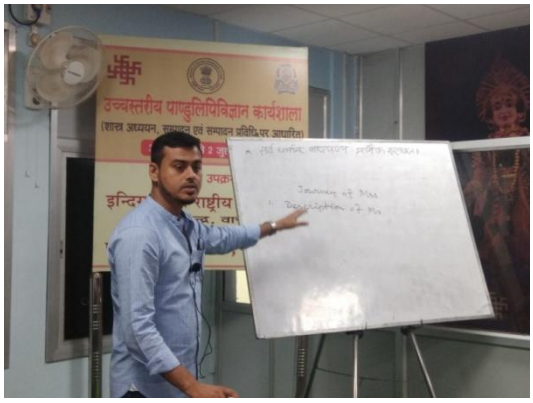

कल्याणी विश्वविद्यालय, कोलकाता से आमन्त्रित नवोदित विद्वान् डॉ० सोमनाथ सरकार ने **चार** व्याख्यान दिया। पाण्डुलिपियों के पुष्पिका में उल्लिखत तथ्यों के आधार पर समय निर्धारण कैसे करें, भिन्न-भिन्न प्रकार के संस्करण का महत्त्व ,

उच्चतर समीक्षा, भिन्न-भिन्न प्रकार के संवत् आदि के विषय में आपने विस्तार से चर्चा की।

का०हि०वि०वि०, संस्कृत विद्याधर्मविज्ञान संकाय के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर भगवत् शरण शुक्ल जी व्याकरणशास्त्रीय ग्रन्थों के सम्पादन पद्धति पर प्रकाश डालते हुए कजेस आफ करप्सन्स के १२ भेदों का उल्लेख किया तथा सम्पादन म आनेवाली कठिनाइयां का सोदाहरण उल्लेख किया ओर कहा कि जौहरी ही रत्नों का पहचान कर सकता है। अतः विषय के अनुसार पाण्डुलिपियों को पहचान कर, उनका संग्रह कर उनको प्रकाशन योग्य बनाना चाहिए। यह कार्य आज के नयी पीढ़ी का दायित्त्व है। अपने गुरुओं से मार्गदर्शन लेकर इस क्षेत्र में कर्तव्यनिष्ठा से सनद्ध हो जाना चाहिए। तभी भारत के ज्ञान-भण्डार का उद्धार सम्भव है।

कोलकाता से आमन्त्रित विदुषी प्रोफेसर रत्ना बसु जी ने **तीन** व्याख्यान दिया। आपने बौद्ध-परम्परा में उपलब्ध धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों का एवं निबन्ध ग्रन्थों का विश्लेषण विषय पर विस्तृत चर्चा की एवं प्रक्षिप्तों के विषय में भी उल्लेखनीय जानकारी प्रस्तुत की।

अहमदाबाद , गुजरात से आमन्त्रित एल०डी० इनस्टिट्यूट के निदेशक प्रोफेसर जितेन्द्र भाई शाह जी ने **चार** व्याख्यान प्रस्तुत किया। आपने जैन वाङ्मय का परिचय देते हुए जैन धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों पर विशेष चर्चा की उनके अनुसार जैन परम्परा में शब्द की अपेक्षा अर्थ पर अधिक बल दिया गया है। आपने सुष्माकाल, दुष्माकाल, अर्थ की देशना, आवश्यक सूत्र, चूर्णियाँ, निरुक्तियाँ, भाष्य, टीकाएँ, निक्षेप तथा देशज शब्दों का ज्ञान को प्राकृत पाण्डुलिपि के सम्पादन के लिए अत्यावश्यक माना।

भारत अध्ययन केन्द्र के यशस्वी समन्वयक, प्रोफेसर सदाशिव कुमार द्विवेदी जी ने **पाण्डुलिपियों के वंशवृक्ष निर्माण : उद्योगपर्व के परिप्रेक्ष्य में** विषय पर अत्यन्त ही उपादेय व्याख्यान प्रस्तुत किया। विद्वान् वक्ता ने उद्योगपर्व नामकरण की यथार्थता को स्पष्ट करते हुए कहा कि इस पर्व में शान्ति के लिए श्रीकृष्ण द्वारा उद्योग किये गये हैं तथा युद्ध के लिए कौरवों द्वारा उद्योग किये गये हैं। उन्होंने कहा कि भण्डारकर ओरियण्टल इन्स्टिट्यूट के उद्योग से ही महाभारत का प्रामाणिक संस्करण प्रकाश में आया। इसके आधार पर पाण्डुलिपियों का वंशवृक्ष कैसे निर्माण किया जा सकता है उसको ध्यानपूर्वक समझने की आवश्यकता है। उन्होंने उत्तरीवाचना, दक्षिणोवाचना, पूर्वीवाचना तथा पश्चिमीवाचना आदि के माध्यम से पाण्डुलिपियों का कैसे वशवृक्ष बनाया जा सकता है उसका प्रयोग कर प्रतिभागियों को अवगत कराया।

कार्यशाला के समय-सारणी के अनुसार प्रतिभागियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु सारनाथ संग्रहालय एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ले जाया गया।

शैक्षणिक भ्रमण पर प्रतिभागी

शैक्षणिक भ्रमण पर प्रतिभागी

कार्यशाला का समापन सत्र दिनांक ०२ जुलाई २०१९ को प्रातः 11.00 बजे प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस सत्र में प्रोफेसर जयशंकर लाल त्रिपाठी जी मुख्य अतिथि एवं प्रोफेसर ब्रजकिशोर स्वाईं जी सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

समापन सत्र- प्रोफेसर ब्रजकिशोर स्वाईं, प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी एवं प्रोफेसर जयशंकर लाल त्रिपाठी

अध्यक्षीय उद्बोधन के माध्यम से न्याय शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी जी ने कहा कि इस कार्यशाला की प्रारूप प्राचीन शिक्षा पद्धति के अनुसार तैयार की गयी थी। प्राचीन गुरुकुल पद्धति के अनुसार प्रतिभागियों ने यहाँ शास्त्राध्ययन किया है और पाठ सम्पादन के सिद्धान्तों को आत्मसात् किया है। यह कार्यशाला एक अद्वितीय कार्यशाला है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर जयशंकर लाल त्रिपाठी जी ने इस प्रकार के कार्यशाला की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रतिभागियों को कहा कि जो ज्ञान आप अर्जित किये हैं उनको व्यवहार में लाने की आवश्यकता है नहीं तो इसकी सार्थकता सिद्ध नहीं होगी। विषय से सम्बन्धित पाण्डुलिपियों का संग्रह कर मिले हुए ज्ञान का उपयोग करना चाहिए।

कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि के रूप मं उपस्थित प्रोफेसर ब्रजकिशोर स्वाइँ जी ने प्रातापमार्तण्ड ग्रन्थ के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए कहा कि भट्टमीमांसक कमलाकर

भट्ट के पिता थे प्रतापमार्तण्डकार श्री रामकृष्णभट्ट। रामकृष्ण भट्ट काशी के विद्वान् थे । उद्भट प्रतिभा क धनी श्री रामकृष्णभट्ट उत्कल के राजा प्रतापरुद्रदेव के सभा पण्डित थे। उन्होंने राजा प्रतापरुद्र के नाम से इस ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में उत्कलीय परम्परा एवं काशी के परम्परा का स्पष्ट झलक दिखाई देता है। इसका प्रकाशन न केवल भारत अपित् विश्व जनमानस के लिए अत्यन्त ही आवश्यक है।

कार्यशाला की उपलब्धि

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ **प्रतापमार्तण्ड** का आलोचनात्मक संस्करण तैयार करना। सम्पादन कार्य का गुरुतर दायित्व धर्मशास्त्र के अद्वितीय विद्वान् आचार्य ब्रजकिशोर स्वाईं जी पर था। प्रोफेसर स्वाईँ जी की कुशल दिशानिर्देश से तथा प्रतिभागियों के पूर्ण सहयोग से, उद्योग के कारण ही अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुआ। एक माह की अवधि में पाँच पाण्डुलियों के आधार पर सम्पादन(पाठोद्धार, पाठ संकलन एवं पाठनिर्णय) कार्य करना, वो भी प्रतिभागियों के सहयोग से अत्यन्त ही चुनौती पूर्ण था। जिसको हमारे प्रतिभागियों ने पूर्ण किया। क्षेत्रीय केन्द्र के निदेशक डॉ० विजय शंकर शुक्ल जी द्वारा योजनाबद्ध तरीके से कार्यशाला की समयसारणी को तैयार किया था जिसके सटीक क्रियान्वयन का दायित्व कार्यशाला के संयोजक डॉ० त्रिलोचन प्रधान पर था। सम्पादन कार्य हेतु सभी प्रतिभागियों को ५ दल(टीम) में विभाजित किया गया था। विषय विशेषज्ञ के तत्तवावधान में गठित पाँचो दल अपने-अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहे। विषय सूची, संकेत सूची, पारिभाषिक शब्दावली, उद्धरण वाक्य सूची, सहायक ग्रन्थसूची, लघु भूमिका जो अंग्रेजी में है आदि का एक प्रारूप तैयार कर लिया गया है, सम्पूर्ण मूल का टंकण कार्य भी पूर्ण हो गया है जिसको अन्तिम रूप देना है। हिन्दी अनुवाद के साथ इस ग्रन्थ को प्रकाशित करना केन्द्र का लक्ष्य है ।

जो मिथक बना था कि कार्यशाला के माध्यम से ग्रन्थ का सम्पादन सम्भव नहीं है इस मिथक को ३ जून से २ जुलाई तक निरन्तर प्रात: १० बजे से रात्रि ८ बजे तक कार्य करते हुए हमारे प्रतिभागियों ने तोड़ा। ५७१० पृष्ठ के सन्तुलन पत्रिका तैयार किया, उनका कम्पेयर किया। इसके लिए सभी प्रतिभागी साधुवाद के पात्र हैं।

त्रिलोचन प्रधान
कार्यशाला संयोजक